17-03-2023

AUKUS समझौता

समाचार पत्रों में क्यों?

हाल ही में, ऑस्ट्रेलिया ने त्रिपक्षीय रक्षा समझौते 'ऑकस' (AUKUS) के तहत पांच अमेरिकी परमाणु-संचालित पनडुब्बियों को खरीदने की घोषणा की है।

त्वरित मुद्दा?

- इसके अंतर्गत अमेरिका और ब्रिटेन द्वारा निर्मित परमाणु ऊर्जा से संचालित पनडुब्बियों को ऑस्ट्रेलिया को सौपा जाएगा।
- इस समझौते को हिंद-प्रशांत क्षेत्र में स्थिरता को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम माना जा रहा है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि?

- क्वाड की धारणा के विपरीत यह गठबंधन हिंद-प्रशांत क्षेत्र में स्पष्ट रूप से घोषित सैन्य गठबंधन है।
- इस समझौते का प्रमुख उद्देश्य हिंद-प्रशांत क्षेत्र में भागीदारों के रणनीतिक हितों की रक्षा करना है। उल्लेखनीय है कि इस क्षेत्र में चीन की बढ़ती गतिविधियाँ वैश्विक समुदाय के लिये चिंता का विषय हैं।
- यह समझौता ऑस्ट्रेलिया एवं चीन के संबंधों को नकारात्मक रूप से प्रभावित करेगा, जो पहले से ही कठिन दौर से गुजर रहे हैं। ध्यातव्य है कि चीन ऑस्ट्रेलिया के सबसे बड़े व्यापारिक भागीदारों में से एक है। वर्तमान में दोनों देशों के मध्य लगभग 200 बिलियन डॉलर का व्यापार होता है।
- यह कदम इंडो-पैसिफिक में स्थिरता को बढ़ावा देगा और साझा मूल्यों और हितों का समर्थन करेगा।
- यह एक शांतिपूर्ण और नियम-आधारित

अन्य प्रमुख तथ्य?

भारत में परमाणु संचालित पनडुब्बी

- भारत विश्व के उन छह देशों में शामिल है, जिनके पास परमाणु संचालित पनडुब्बियाँ हैं। इसके अतिरिक्त अमेरिका, ब्रिटेन, रूस, फ्रांस तथा चीन के पास भी ऐसी पनडुब्बियाँ हैं।
- भारत ने वर्ष 1987 में सोवियत संघ से k-43 चार्ली क्लास परमाणु स्वचालित पनडुब्बी प्राप्त की थी। भारतीय नौसेना में इसे आईएनएस चक्र नाम दिया गया। इसने वर्ष 1991 तक भारतीय नौसेना को अपनी सेवाएँ दी थी।
- भारत ने रूस से वर्ष 2012 में एक और परमाणु संचालित पनडुब्बी को लीज़ पर लिया था। इसे नौसेना में आईएनएस चक्र 2 नाम दिया गया।
- आईएनएस अरिहंत परमाणु शक्ति चालित भारत की प्रथम पनडुब्बी है। •इसका जलावतरण जुलाई 2009 में किया गया था। वर्ष 2018 में परमाणु हथियार लॉन्च करने की क्षमता का प्रदर्शन करने के बाद इसे रणनीतिक सहायक नयूक्लियर सबमरीन के रूप में वर्गीकृत किया गया है।
- आईएनएस अरिहंत भारत के परमाणु त्रय को पूरा करती है अर्थात देश को ज़मीन, विमान और पनडुब्बी से परमाणु मिसाइलों को लॉन्च करने की क्षमता प्राप्त है।
- आईएनएस अरिहंत श्रेणी की दूसरी पनडुब्बी आईएनएस अरिघात को भी जल्द ही नौसेना में शामिल किये जाने की संभावना है।

अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था सुनिश्चित करेगा।

- परमाणु ऊर्जा से चलने वाली पनडुब्बियों को लंबी अवधि के लिए तैनात किया जा सकता है और कम बार सतह पर आने की जरूरत होती है।
- चीन ने इस समझौते के प्रति चिंता व्यक्त की है। उसका मानना है कि इस प्रकार के समझौते उसे केंद्र में रखकर तथा उसके हितों को प्रभावित करने के लिये किये जा रहे हैं।
- चीन ने ऐसे समझौतों को क्षेत्रीय शांति एवं स्थिरता के लिये खतरा तथा हथियारों की होड़ को बढ़ावा देने वाला माना है।
- गौरतलब है कि चीन के पास परमाणु ऊर्जा से चलने वाली पनडुब्बियाँ हैं। इनमें परमाणु मिसाइलों को भी लॉन्च करने की क्षमता है। 'ऑकस' समझौते के अंतर्गत ऑस्ट्रेलिया को परमाणु ऊर्जा से संचालित पनडुब्बियाँ प्राप्त होने के बाद हिंद-प्रशांत क्षेत्र में उसकी नौसैनिक क्षमता में वृद्धि होगी।
- हालांकि भारत AUKUS समूह का सदस्य नहीं है AUKUS के प्रति कथित उदासीनता के बावजूद, भारत AUKUS व्यवस्था से लाभ प्राप्त कर सकता है
- जैसे चीन द्वारा 'घेरे की नीति' के संबंध में भारत की चिंताओं को AUKUS द्वारा आंशिक रूप से कम किया जा सकता है।
- हालांकि बात की आशंका है कि इस सौदे से अंततः पूर्वी हिंद महासागर में परमाणु हमला करने वाली पनडुब्बियों की भीड़ हो सकती है, जिससे भारत की क्षेत्रीय श्रेष्ठता का क्षरण हो सकता है।

'साझा बौद्ध विरासत'

समाचार पत्रों में क्यों?

"साझी बौद्ध विरासत" पर शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) के दो दिनों (14-15 मार्च) तक चलने वाले अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का नई दिल्ली के विज्ञान भवन में उद्घाटन किया गया, जिसमें एससीओ राष्ट्रों के साथ भारत के सभ्यतागत जुड़ाव पर ध्यान केंद्रित किया गया।

त्वरित मुद्दा?

- दो-दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन संस्कृति मंत्रालय, विदेश मंत्रालय और अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध परिसंघ (आईबीसी - संस्कृति मंत्रालय के एक अनुदान प्रदाता निकाय के रूप में) द्वारा किया।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि?

- दो दिवसीय सम्मेलन का उद्देश्य SCO देशों के विभिन्न संग्रहालय संग्रहों में मध्य एशिया की बौद्ध कला, कला शैलियों, पुरातात्विक स्थलों और पुरातनता के बीच ट्रांस-सांस्कृतिक संबंधों को फिर से स्थापित करना और समानता की तलाश करना है।
- इस सम्मेलन का उद्देश्य यहां एकत्र हुए राष्ट्रों के बीच दूरस्थ सांस्कृतिक संबंधों और साझा इतिहास को नवीनीकृत करना है।
- एससीओ के भारत के नेतृत्व में इस कार्यक्रम ने साझा बौद्ध विरासत पर चर्चा करने के लिए मध्य एशियाई, पूर्वी एशियाई, दक्षिण एशियाई और अरब देशों को एक साथ लाया है।
- एससीओ के भारत के नेतृत्व में (एक वर्ष की अवधि के लिए, 17 सितंबर, 2022 से सितंबर 2023 तक) यह अपनी तरह का पहला आयोजन है, जो मध्य एशियाई, पूर्वी एशियाई, दक्षिण एशियाई और अरब देशों को एक साझा मंच पर एक साथ लाया है जिसमे "साझा बौद्ध विरासत" पर चर्चा की जाएगी।
- भारत, बौद्ध धर्म का केंद्र होने के नाते और भारत का एक समृद्ध इतिहास और सांस्कृतिक विरासत है, जिसमें बौद्ध धर्म इसका अभिन्न अंग है। इस वर्ष भारत में आयोजित होने वाले एससीओ शिखर सम्मेलन के साथ, देश इस अवसर का उपयोग बौद्ध धर्म के साथ अपने गहरे संबंधों और अपनी विरासत को संरक्षित

अन्य प्रमुख तथ्य?

एससीओ के बारे में

- शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) में रूस, भारत, चीन, पाकिस्तान, कजाकिस्तान, किर्गिस्तान, ताजिकिस्तान और उजबेकिस्तान सहित आठ सदस्य देश शामिल हैं।
- एससीओ एक महत्वपूर्ण क्षेत्रीय संगठन है जिसका उद्देश्य अपने सदस्यों के बीच आर्थिक, राजनीतिक और सैन्य सहयोग को बढ़ावा देना है।
- संगठन में यूरेशियन भूमि का 60% से अधिक, विश्व की 40% आबादी और वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद का 30% शामिल है।

करने और बढ़ावा देने के प्रयासों को प्रदर्शित करने के लिए कर रहा है।

- शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) और बौद्ध धर्म के बीच गहरा संबंध है, क्योंकि भारत, चीन, मध्य एशियाई गणराज्य और यहां तक कि रूस जैसे कई सदस्य देशों के पास बौद्ध विरासत है। बौद्ध धर्म का मध्य एशिया में एक लंबा इतिहास रहा है और इसकी ऊंचाई पर, बौद्ध धर्म का मध्य एशिया की संस्कृति और इतिहास पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा, जिसमें पूरे क्षेत्र में कई मंदिर और मठ बनाए गए थे। बौद्ध विरासत अभी भी कजाकिस्तान, किर्गिस्तान और उज्बेकिस्तान जैसे देशों में पाई जा सकती है, जहां प्राचीन खंडहर, कला और कलाकृतियां धर्म की पूर्व प्रमुखता की गवाही देती हैं।

न्यूज फटाफट

मतुआ संप्रदाय

- वैष्णव हिंदू धर्म से संबंधित मतुआ संप्रदाय की स्थापना अविभाजित बंगाल में हरिचंद ठाकुर ने की थी। •पूर्वी पाकिस्तान के विभाजन के बाद अधिकांश मतुआ अनुयायी पश्चिम बंगाल में बस गए।
- प्रारभिक रूप से इसे चांडाल और अछूत माने जाने वाले नामशूद्र समुदाय के सदस्यों द्वारा अपनाया गया था।
- जातिगत उत्पीड़न का विरोध करने वाले इस संप्रदाय ने बाद में माली एवं तेली सहित उच्च जातियों द्वारा हाशिये पर रखे गए अन्य समुदायों के अनुयायियों को आकर्षित किया।
- प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने श्री हरिचंद ठाकुर जी को श्रद्धांजलि देने के लिये लोगों से मतुआ महा मेला में भाग लेने का आह्वान किया है।

व्यक्तिगत जीनोमिक मानचित्रण

- रिलायंस कंपनी ने भारतीयों के लिये किफायती व्यक्तिगत जीनोमिक मानचित्रण (Personal Genome Mapping: PGM) किट पेश करने की घोषणा की है।
- पी.जी.एम. रोगों के प्रति आनुवंशिक प्रवृत्ति को बेहतर ढंग से समझने में मदद कर सकता है।
- पायलट चरण में रिलायंस के ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म के माध्यम किट की बिक्री की जाएगी। साथ ही घर पर एकत्र किये गए रक्त के नमूनों के माध्यम से इसके द्वारा जाँच की जाएगी।
- किसी जीव के जीनोमिक अनुक्रम न्यूक्लियोटाइड्स से बने होते हैं। एक प्रजाति के भीतर अधिकांश न्यूक्लियोटाइड अनुक्रम समान होते हैं, लेकिन इनमें पाई जाने वाली भिन्नता ही जीनोमिक विविधता उत्पन्न करती है।

दोहा घोषणापत्र

- क़तर में आयोजित अल्प विकसित देशों पर पाँचवे संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन (LDC5) के दौरान 'दोहा घोषणापत्र' अपनाया गया।
- यह एक दस वर्षीय (2022-2031) कार्ययोजना है जिसका उद्देश्य विश्व के 46 अल्प विकसित देशों को सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति के लिये वापस ट्रैक पर लाना है।

- इस कार्ययोजना में मुख्य रूप से गरीबी उन्मूलन, जलवायु परिवर्तन, अंतर्राष्ट्रीय भागीदारी जैसे क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है।
- इसके पूर्ण कार्यान्वयन से इन अल्प विकसित देशों में कोविड-19 महामारी के नकारात्मक सामाजिक-आर्थिक प्रभावों को दूर करने में मदद मिलेगी।

ओ-स्मार्ट (O-SMART) योजना

- सरकार ने 5 वर्ष की अवधि यानी 2021-22 से 2025-26 के दौरान 'महासागरीय सेवाओं, प्रौद्योगिकी, निगरानी, संसाधन प्रतिरूपण और विज्ञान (O-SMART)' योजना के कार्यान्वयन के लिये 2177 करोड़ रुपए की राशि आवंटित की।
- इसके अलावा योजना के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय द्वारा निम्नलिखित कदम उठाए जा रहे हैं: एर्गो फ्लोट्स, XBT/XCTD, वेव राइडर ब्वॉय, स्वचालित मौसम स्टेशन, ड्रिफ्टर्स, मूरेड ब्वॉय, टाइड गेज़, ध्वनिक डॉपलर धारा प्रोफाइलर सहित विभिन्न महासागर अवलोकन प्लेटफॉर्म तैनात किये गए।
- डेटा का उपयोग करके सूनामी की प्रारंभिक चेतावनी, तीव्र तूफान, संभावित मत्स्य ग्रहण क्षेत्र, महासागरीय स्थिति का पूर्वानुमान, हानिकारक शैवाल वृद्धि, प्रवाल भित्ति, बहु-जोखिम भेद्यता, तटीय भेद्यता सूचकांक, हाई वेव अलर्ट, तेल रिसाव, खोज एवं बचाव अभियान आदि का उपयोग कर उत्पन्न की गई। मॉडल इन हाउस परिचालित होते हैं और विभिन्न हितधारकों तथा अंतिम उपयोगकर्त्ताओं को प्रतिदिन के आधार पर डेटा प्रदान किये जाते हैं। •प्रौद्योगिकी और नीतियों का प्रसार करने के लिये नियमित आधार पर तटीय सर्वेक्षण तथा गहरे समुद्र में परिभ्रमण व जन जागरूकता अभियान एवं संबंधित गतिविधियाँ आयोजित की जाती हैं।